

(पद्धति छंद)

चउ कर्मसु त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोषराशि ।
जे परम सुगुण हैं अनंत धीर, कहवत के छ्यालिस गुणगंभीर ॥२॥
शुभ समवशरण शोभा अपार, शत इन्द्र नमत कर सीस धार ।
देवाधिदेव अरहन्त देव, वन्दौं मन-वच-तन कर सुसेव ॥३॥
जिनकी धुनि है ओंकाररूप, निर-अक्षरमय महिमा अनूप ।
दश-अष्ट महाभाषा समेत, लघु भाषा सात शतक सुचेत ॥४॥
सो स्याद्वादमय सप्तभंग, गणधर गूँथे बारह सुअंग ।
रवि-शशि न हूँ सो तम हराय, सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय ॥५॥
गुरु आचारज उवझाय साधु, तन नगन रत्नत्रय निधि अगाध ।
संसार देह वैराग धार, निरवांछि तपै शिव-पद निहार ॥६॥
गुण छत्तिस पच्चिस आठ-बीस, भव-तारन-तरन जिहाज ईस ।
गुरु की महिमा वरनी न जाय, गुरुनाम जपों मन-वचन-काय ॥७॥
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालामहाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(सोरठा)

कीजे शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरै ।
'द्यानत' सरधावान, अजर-अमर पद भोगवै ॥८॥
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

भजन

अब प्रभु चरण छोड़ कित जाऊँ ।
ऐसी निर्मल बुद्धि प्रभु दो, शुद्धातम को ध्याऊँ ॥टेक॥
सुर नर पशु नारक दुख भोगे, कबतक तुम्हें सुनाऊँ ।
बैरी मोह महा दुख देवे, कैसे याहि भगाऊँ ॥अब॥
सम्यग्दर्शन की निधि दे दो, तो भवभ्रमण मिटाऊँ ।
सिद्ध स्वपद को प्राप्त करूँ मैं, परम शान्त रस पाऊँ ॥अब॥
भेदज्ञान का वैभव पाऊँ, निज के ही गुण गाऊँ ।
तुम प्रसाद से वीतराग प्रभु, भवसागर तर जाऊँ ॥अब॥